+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

YOJANA MAGAZINE ANALYSIS

(योजना पत्रिका विश्लेषण)

(स्वच्छ भारत मिशन के 10 वर्ष)

(October 2024)

(Part I)

TOPICS TO BE COVERED

- स्वभाव स्वच्छता, संस्कार स्वच्छता
- स्वच्छ भारत अभियान: ग्रामीण स्वच्छता पर प्रभाव
- स्वच्छ भारत मिशन की सफलता की कहानी

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

स्वभाव स्वच्छता, संस्कार स्वच्छता:

स्वच्छता पर गांधीजी का विचार:

- राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने स्वच्छता और सफाई की पुरजोर हिमायत की है। वे इसे व्यक्तिगत और सामाजिक स्वास्थ्य के लिए आवश्यक मानते थे। उनका यह कथन काफी प्रसिद्ध है कि '***स्वच्छता, स्वतंत्रता से अधिक महत्वपूर्ण है***' जो इस बात पर प्रकाश डालता है कि स्वस्थ और आत्मनिर्भर राष्ट्र के लिए साफ और स्वच्छ वातावरण एक अनिवार्य शर्त है।

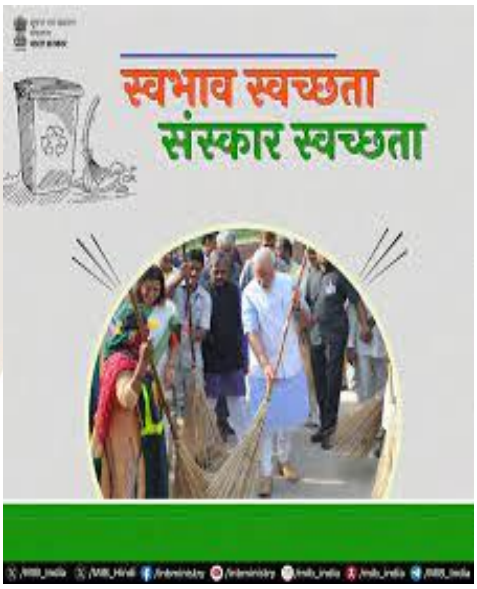

- महात्मा गांधी ने रोजमर्रा की जिंदगी में स्वच्छता के महत्व पर जोर दिया, व्यक्तियों से खासकर ग्रामीण इलाकों में अपने आस-पास के स्थानों पर साफ-सफाई की जिम्मेदारी लेने का आग्रह किया।
- स्वच्छता पर उनके विचार भारत के सार्वजनिक स्वास्थ्य आंदोलनों की आधारशिला बन गए और स्वच्छ भारत अभियान जैसी आधुनिक पहलों की प्रेरणा बने।

स्वच्छ भारत अभियान के 10 वर्ष पूरे:

- 2 अक्टूबर, 2014 को प्रधानमंत्री द्वारा शुरू किया गया स्वच्छ भारत अभियान साफ-सफाई और स्वच्छ भारत निर्माण की दिशा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है।
- इस महीने अभियान के दस साल पूरे होने तक, इसने कई उल्लेखनीय सफलताएं हासिल की हैं। सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धियों में से एक यह है कि 2019 में सरकार ने ग्रामीण भारत को खुले में शौच से मुक्त घोषित कर दिया।
- 11 करोड़ से अधिक शौचालय बनाए गए, जिससे खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में लाखों परिवारों को लाभ हुआ। इससे स्वच्छता में काफी सुधार हुआ और जलजनित बीमारियों में कमी आई।
- स्वच्छता और सफाई के बारे में सामाजिक व्यवहार को बदलने के लिए एक व्यापक जागरूकता अभियान शुरू किया गया।

स्वच्छ भारत अभियान का प्रभाव:

- स्वच्छ भारत अभियान ने एक साझा जिम्मेदारी के रूप में स्वच्छ वातावरण के विचार को बढ़ावा देकर लाखों लोगों की मानसिकता को सफलतापूर्वक बदल दिया।

- लोगों को शौचालय का उपयोग करने के लिए प्रेरित करने में 'दरवाजा बंद' अभियान काफी प्रभावशाली रहा।
- शहरी क्षेत्रों में, ठोस अपशिष्ट प्रबंधन, अपशिष्ट पृथक्करण और सीवेज उपचार सुविधाओं को बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित किया गया।
- स्वच्छ भारत अभियान ने ठोस अपशिष्ट प्रबंधन के प्रयासों को काफी बढ़ावा दिया है। स्रोत पर अपशिष्ट पृथक्करण को बढ़ावा दिया गया है, और कई शहरों ने अपने अपशिष्ट निपटान तंत्र में सुधार किया।

स्वच्छ भारत अभियान ने साझा जिम्मेदारी को जगाया:

- स्वच्छ भारत अभियान की सफलता केवल सरकारी पहल का परिणाम नहीं है, बल्कि आम नागरिकों की सक्रिय भागीदारी का भी परिणाम है।
- इस अभियान में स्वच्छता का संदेश फैलाने के लिए मशहूर हस्तियों, सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर और आम नागरिकों का हाथ रहा।
- 'स्वच्छता ही सेवा' जैसे अभियानों ने स्वच्छता अभियानों में भाग लेने के लिए देश भर में लाखों स्वयंसेवकों को संगठित किया।
- हर साल आयोजित किए जाने वाले स्वच्छता सर्वेक्षण ने भारत में सबसे स्वच्छ शहर बनने के लिए शहरों के बीच स्वस्थ प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा दिया है।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

- स्वच्छ भारत अभियान चरण-2 (2020 से आगे) के शुभारंभ के साथ, जल संरक्षण, दूषित जल प्रबंधन और स्थायी स्वच्छता कार्यों पर जोर देते हुए चरण 1 की उपलब्धियों को बनाए रखने पर ध्यान केंद्रित किया गया।

स्वच्छ भारत अभियान की अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसा:

- स्वच्छ भारत अभियान को अपने महत्वाकांक्षी पैमाने और स्वच्छता पर ध्यान केंद्रित करने के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसा मिली है।
- इसे अपने स्वच्छता मानकों को बेहतर बनाने का लक्ष्य रखने वाले अन्य देशों के लिए एक मॉडल के रूप में देखा गया है। भारत की यह पहल न केवल भारत के प्रयासों को मान्यता प्रदान करती है बल्कि अन्य देशों को भी इसी तरह के प्रयास एवं कार्यक्रम शुरू करने के लिए प्रेरित करती है, जिससे वैश्विक जिम्मेदारी की भावना को बढ़ावा मिलता है।

स्वच्छ भारत अभियान: ग्रामीण स्वच्छता पर प्रभाव

भारत में स्वच्छता का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य:

- भारत में स्वच्छता की गहरी से ऐतिहासिक जड़े हैं, जो सिंधु घाटी सभ्यता तक जाती हैं, जहां शहरों के उन्नत अपशिष्ट प्रबंधन प्रणालियों प्रदर्शन किया था। लेकिन इन भव्य विरासत के बावजूद आधुनिक भारत में अपनी तेजी से बढ़ती आबादी की पर्याप्त स्वच्छता प्रदान करने में चुनौतियों का सामना कर रहा है।
- 2014 में स्वच्छता कवरेज केवल 39 प्रतिशत थी, जिससे 55 करोड़ से अधिक, लोग शौचालय की सुविधा से वंचित थे और खुले में शौच करते थे, जिसका सबसे ज्यादा नुकसान महिलाओं को उठाना पड़ता था।

- स्वच्छता में सुधार की दिशा में भारत की यात्रा काफी लंबी रही है, जिसकी शुरुआत 1986 में 'केन्द्रीय ग्रामीण स्वच्छता कार्यक्रम' से हुई जिसमें शौचालयों के निर्माण पर प्रमुखता से ध्यान दिया गया था। इसके बाद 1999 में 'संपूर्ण स्वच्छता

अभियान' शुरू किया गया। 2012 में 'निर्मल भारत अभियान' ने स्वच्छता के लिए समुदाय नेतृत्व वाले हष्टिकोणों पर ध्यान केंद्रित करते हुये इन प्रयासों वन और विस्तार किया।

- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा 2 अक्टूबर 2014 को 'स्वच्छ भारत अभियान' की शुरुआत की जो न केवल कार्यक्रम के पैमाने पर बल्कि आम लोगों के व्यवहार परिवर्तन, सामुदायिक भागीदारी आदि के संदर्भ में भी एक आदर्श बदलाव को चिन्हित किया। इस अभियान ने 2019 तक भारत को खुले में शौच मुक्त (ODF) बनाने का एक महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किया, जिस समय पर हासिल किया गया, जिससे भारत के स्वच्छता परिदृश्य में काफी बदलाव आया।

स्वच्छ भारत अभियान क्यों?

- स्वच्छ भारत अभियान के तर्क के पीछे यह मान्यता है कि स्वच्छता एक बहुआयामी मुद्दा है। खराब स्वच्छता सार्वजनिक स्वास्थ्य, महिला-पुरुष समानता, पर्यावरणीय संधारणीयता और आर्थिक विकास को प्रभावित करती है। स्वच्छ भारत अभियान ने इन परस्पर जुड़ी चुनौतियों को समग्र रूप से संबोधित करने का प्रयास किया है।

स्वास्थ्य पर प्रभाव:

- अपर्याप्त स्वच्छता डायरिया, हैजा और टाइफाइड जैसी जलजनित बीमारियों का एक प्रमुख कारण है, जिससे विशेष रूप में पांच वर्ष से कम उम्र के बच्चों में रुग्णता और मृत्यु दर अधिक होती है।
- विश्व स्वास्थ्य संगठन की एक रिपोर्ट के अनुसार, स्वच्छ भारत अभियान के प्रारंभ होने से पहले भारत में खराब स्वच्छता के कारण हर साल लगभग 3 लाख बच्चों की मृत्यु होती थी।

महिलाओं और बच्चों पर प्रभाव:

- शौचालयों तक पहुंच की कमी महिलाओं और लड़कियों को असमान रूप से प्रभावित करती है। महिलाओं को अक्सर खुले मैदानों में शौच करने के लिए मजबूर होना पड़ता है, जिससे उन्हें उत्पीड़न और हमले का खतरा रहता है।
- अपर्याप्त स्वच्छता सुविधाओं के कारण मासिक धर्म के दौरान लड़कियां अक्सर स्कूल नहीं जाती हैं, जिसके कारण उनके स्कूल छोड़ने की दर बढ़ जाती है।
- यूनिसेफ के अनुसार स्वच्छ भारत अभियान ने महिलाओं की सुरक्षा तथा सम्मान की रक्षा की, घर में शौचालय बनने के बाद महिलाएं सुरक्षित महसूस करती हैं।

पर्यावरणीय प्रभावः

- खुले में शौच और अनुचित अपशिष्ट प्रबंधन पर्यावरण क्षरण में योगदान करते हैं। यूनिसेफ की एक रिपोर्ट के अनुसार, स्वच्छ भारत अभियान ने पर्यावरण को बचाने में मदद की क्योंकि खुले में शौच वाले गांवों में मनुष्यों के कारण भूजल संदूषण की संभावना 12.70 गुना कम थी।

आर्थिक प्रभावः

- खराब स्वच्छता के कारण भारत को भारी आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है। विश्व बैंक के एक अध्ययन के अनुसार खराब स्वच्छता के कारण भारत को 2006 में अपने GDP का लगभग 6.4 प्रतिशत का नुकसान हुआ।
- ये नुकसान मुख्य रूप से स्वास्थ्य लागत, उत्पादकता में कमी और शिक्षा के अवसरों के नुकसान के कारण हुआ था।
- स्वास्थ्य पर खर्च में बचत के कारण खुले में शौच मुक्त गांव में एक परिवार द्वारा सालाना 50,000 रुपये की बचत की गई।

सतत विकास लक्ष्यों (SDG) पर स्वच्छ भारत अभियान का प्रभाव:

- **SDG- 6 (स्वच्छ जल और स्वच्छता):** यह अभियान, SDG- 6 से विशेष रूप से जुड़ा हुआ है, जिसका उद्देश्य 2030 तक 'सभी के लिए पानी तथा स्वच्छता की उपलब्धता और सतत प्रबंधन सुनिश्चित करना' है।

- **SDG-3 (अच्छा स्वास्थ्य और आरोग्यता):** यह अभियान, SDG-3 का भी समर्थन करता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार स्वच्छ भारत अभियान ने डायरिया के कारण सालाना 3 लाख बच्चों की मौत को रोकने में मदद की है।
- **SDG-5 (महिला-पुरुष समानता):** यह अभियान SDG-5 के साथ भी संरेखित है। यूनिसेफ के अनुसार खुले में शौच से मुक्त गांवों में 93 प्रतिशत महिलाएं घर में शौचालय की उपलब्धता के कारण सुरक्षित महसूस करती हैं, और लड़कियों के बीच स्कूल से अनुपस्थिति में काफी कमी आई है।

स्वच्छ भारत अभियान के फोकस क्षेत्र:

- स्वच्छ भारत अभियान के मुख्य फोकस क्षेत्रों में शामिल हैं:
- **खुले में शौच संधारणीयता:** खुले में शौच संधारणीयता से यह सुनिश्चित किया जाता है कि खुले में शौच से मुक्त घोषित किए गए गांव नियमित निगरानी और सामुदायिक सहभागिता के माध्यम से अपनी स्थिति बनाए रखें।
- **ठोस और तरल अपशिष्ट प्रबंधन (SLWM):** स्वच्छ भारत अभियान चरण-2 घरेलू सामुदायिक खाद गड्ढों, अपशिष्ट स्थिरीकरण तालाबों, विकेन्द्रीकृत अपशिष्ट जल उपचार प्रणालियों आदि के माध्यम से ठोस और तरल अपशिष्ट प्रबंधन को बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

- **दृश्य स्वच्छता:** स्वच्छ पर्यावरण का मतलब केवल कार्यात्मक शौचालयों से नहीं है, बल्कि कूड़े से मुक्त सार्वजनिक स्थानों, उचित जल निकासी प्रणालियों और घरेलू स्तर पर अपशिष्ट पृथक्करण को बनाए रखना भी है।
- **सामुदायिक सहभागिता और क्षमता निर्माण:** स्वच्छता प्रयासों में स्वयं सहायता समूहों (SHG), स्थानीय नेताओं और पंचायती राज संस्थाओं को शामिल करना स्वच्छ भारत अभियान की दीर्घकालिक सफलता सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण है। यह अभियान समुदायों को स्वच्छता अवसंरचना का प्रबंधन करने और व्यवहार परिवर्तन को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक कौशल के साथ सशक्त बनाने के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम प्रदान करता है।

भविष्य के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण:

- स्वच्छ भारत अभियान ने अपनी 10वीं वर्षगांठ पूरी की है, इसकी भविष्य की सफलता एक स्मार्ट कार्यनीति अपनाने पर निर्भर करती है, जिसमे निम्नलिखित स्तंभों पर ध्यान केंद्रित करना होगा:
- **अवसंरचना और व्यवहार की संधारणीयता:** स्वच्छ भारत अभियान कार्यक्रम में अब तक हासिल की गई उपलब्धियां को बनाए रखने के लिए निरंतर निगरानी और समुदाय के नेतृत्व वाली पहल जरूरी होगी।

- **महिलाओं को विकास का केंद्र बनाना:** इस अभियान की सफलता में महिलाएं सबसे आगे रही हैं। महिलाओं को आगे बढ़ते हुए, स्वच्छता प्रयासों में नेतृत्व की भूमिका निभानी जारी रखनी चाहिए, विशेष रूप से सामुदायिक स्वच्छता परिसंपत्तियों के संचालन और रखरखाव में।
- **निजी क्षेत्र की भागीदारी में तेजी लाना:** स्वच्छता नवाचारों को बढ़ाने तथा ठोस अपशिष्ट प्रबंधन, स्मार्ट शौचालय और अपशिष्ट से ऊर्जा प्रौद्योगिकी जैसी जटिल चुनौतियों का समाधान करने के लिए सार्वजनिक-निजी भागीदारी महत्वपूर्ण होती। निजी क्षेत्र वित्त पोषण, तकनीकी विशेषज्ञता और अभिनव समाधानों के साथ योगदान दे सकता है जो सरकार के प्रयासों के पूरक बन सकते हैं।
- **प्रशिक्षण और तकनीकी उपायः** स्थानीय समुदायों, सफाई कर्मचारियों और सरकारी अधिकारियों को उन्नत स्वच्छता कार्यों में प्रशिक्षित करना, स्वच्छ भारत अभियान के प्रभाव को बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण है।

आगे की राहः संपूर्ण स्वच्छता प्राप्त करना

- उल्लेखनीय है कि स्वच्छ भारत अभियान 2024-25 तक खुले में शौच की पूर्ण पाबंदी वाले मॉडल गांव बनाने के लिए प्रतिबद्ध है। स्वच्छ भारत अभियान का

दूसरा चरण खुले में शौच से मुक्ति की स्थिति को बदल कर खुले में शौच पर पूर्ण पाबंदी लागू करने पर केंद्रित है, जो दृश्य स्वच्छता और निरंतर व्यवहार परिवर्तन पर जोर देता है।

- इस अभियान की सफलता न केवल इसके द्वारा निर्मित बुनियादी ढांचे में निहित है, बल्कि इसके द्वारा स्थापित मूल्यों - स्वच्छता को प्रत्येक नागरिक की साझा जिम्मेदारी बनाने में भी निहित है। यह सांस्कृतिक बदलाव यह सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण है कि स्वच्छ भारत अभियान के तहत प्राप्त लाभ आने वाली पीढ़ियों के लिए बरकरार रहें।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

स्वच्छ भारत मिशन की सफलता की कहानी:

परिचय:

- स्वच्छ भारत मिशन (SBM), जिसकी शुरुआत प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 2 अक्टूबर, 2014 को की थी, भारत में सार्वभौम स्वच्छता कवरेज प्राप्त करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन का प्रतिनिधित्व करता है।
- महात्मा गांधी की 150वीं जयंती 2019 तक भारत को 'खुले में शौचमुक्त' (ODF) बनाने के महत्वाकांक्षी लक्ष्य के साथ, इस पहल ने देश के स्वच्छता और सफाई के दृष्टिकोण को पूरी तरह से बदल दिया है।

- इस मिशन का उद्देश्य ग्रामीण भारत में 10 करोड़ से अधिक शौचालयों का निर्माण करके लाखों भारतीयों के स्वास्थ्य और कल्याण में सुधार लाना था और यह समुदाय-संचालित स्वच्छता सुधार का एक वैश्विक मॉडल बन गया है।

स्वच्छ भारत मिशन ग्रामीण- चरण I (2014-2019):

- स्वच्छ भारत मिशन-ग्रामीण (SBM-G) चरण 1 एक अत्याधुनिक पहल थी जिसने स्वच्छता प्रयासों में राष्ट्रीय स्तर पर भागीदारी को प्रमुखता दी।

- यह चरण दुनिया में सबसे बड़े व्यवहार परिवर्तन आंदोलन का प्रतीक बना, जिसका उद्देश्य जागरुकता अभियानों, शिक्षा, और बुनियादी ढांचे के विकास के माध्यम से खुले में शौच की समस्या को समाप्त करना था।
- शौचालयों और स्वच्छता बुनियादी ढांचे के निर्माण ने न केवल स्वच्छता में सुधार किया बल्कि स्वास्थ्य पर भी महत्वपूर्ण प्रभाव डाला, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में जहां स्वच्छता सुविधाओं की कमी थी।

स्वच्छ भारत मिशन ग्रामीण - चरण II (2019-2025):

- SBM-G चरण II को 2025 तक खुले में शौचमुक्त (ODF) स्थिति को बनाए रखने और ठोस और तरल कचरे का प्रबंधन करने के लिए शुरू किया गया।
- इस चरण का ध्यान 'सम्पूर्ण स्वच्छता' पर केंद्रित है, जिसमें ODF प्लस गांवों की निर्माण शामिल है जो स्वच्छता मानकों को बनाए रखते हैं और सुधारते हैं।
- 1.40 लाख करोड़ के निवेश के साथ, इस चरण में विभिन्न सरकारी योजनाओं को एकीकृत किया गया है ताकि स्वच्छती बुनियादी ढांचे को बढ़ाया जा सके।
- सितंबर 2024 तक, भारत के 3.87 लाख से अधिक गांवों ने ODF प्लस स्थिति प्राप्त कर ली है।

- इस चरण में 11.64 करोड़ से अधिक घरेलू शौचालयों और 2.41 लाख से अधिक सामुदायिक स्वच्छता परिसर का निर्माण भी किया गया है।

स्वच्छ भारत मिशन - शहरी (SBM-U):

- स्वच्छ भारत मिशन (शहरी) (SBM-U), जिसकी शुरुआत 2 अक्टूबर 2014 को की गई थी, ने भारत में शहरी स्वच्छता और सफाई को महत्वपूर्ण रूप से बदल दिया है।
- सितंबर 2024 तक, इस पहल के तहत 63 लाख से अधिक घरेलू शौचालयों और 6.3 लाख से अधिक सार्वजनिक शौचालयों को निर्माण किया गया है।

स्वच्छ भारत मिशन को लेकर नेचर में प्रकाशित अध्ययन रिपोर्ट:

- नेचर पत्रिका, में हाल ही में प्रकाशित एक अध्ययन में प्रमुख विशेषज्ञों ने खुलासा किया है कि स्वच्छ भारत मिशन (SBM) ने देशभर में नवजात और पांच साल से कम उम्र के बच्चों की मृत्यु दर को काफी हद तक कम करने में योगदान दिया है सालाना 60,000 से 70,000 नवजात जीवन को बचाया है।
- अध्ययन ने 640 जिलों से एक दशक (2011-2020) के आंकड़ों का विश्लेषण किया, जिसमें नवजात मृत्यु दर (IMR) और पांच साल से कम उम्र की मृत्यु दर (U5MR) को प्राथमिक परिणामों के रूप में लिया गया।

- **अध्ययन का मुख्य निष्कर्ष:** इतिहास में, भारत में शौचालय पहुंच और बाल मृत्यु दर के बीच एक मजबूत उल्टा संबंध देखा गया है।

अध्ययन के प्रमुख निष्कर्ष:

- 2014 में SBM के कार्यान्वयन के बाद पूरे भारत में शौचालयों के निर्माण में नाटकीय रूप से वृद्धि हुई।
- इस विश्लेषण से प्राप्त परिणाम बताते हैं कि SBM के बाद जिला स्तर पर शौचालय तक पहुंच में प्रत्येक 10 प्रतिशत अंकों की वृद्धि के साथ-साथ जिला स्तर पर शिशु मृत्यु दर (IMR) में 0.9 अंकों की कमी और U5MR में औसतन 1.1 अंकों की कमी आई है।
- अध्ययन से पता चला है कि SBM के तहत 30% से अधिक शौचालय कवरेज वाले जिलों में प्रति हजार जीवित जन्मों पर IMR में 5.3 और U5MR में 6.8 की कमी देखी गई। पूर्ण संख्या में, यह गुणांक सालाना 60,000 - 70,000 शिशुओं के जीवन के बराबर होगा।